शिक्षा की नई चुनौतियाँ

दुनिया के सब लोगों का एक सपना - अपने देश का विकास है। देश के विकास केलिए, सब लोगों की शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा सब लोगों को खासकर महिलाओं को भी बहुत ज़रूरी है। लेकिन आज महिलाओं को शिक्षा न देते हैं। यह कुछ देशों की प्रथा है कि 'लड़की तो पराई है'। इस कारण से देश के सभी लोगों को एक साथ साथ देश की प्रगति केलिए प्रयत्न न कर सकता है। यह हमारा शिक्षा की एक बड़ा चुनौति है।

शिक्षा तो सबसे श्रेष्ट धन है। विद्याधन तो सबसे बड़ा धनरत्न है। यह हासिल करते तो सदा हमारा साथ रहेगा। विद्या से हमको आदरण मिलता है। इसलिए शिक्षा पाने में कोई बुराई नहीं। सच्चे इंसान को बनेगा, सच्चे शिक्षा। लेकिन आज के शिक्षा संप्रदाय में कुछ कमियाँ हैं।

बच्चे पुस्तक के सारे कार्यों को पढते हैं। लेकिन उसके प्रायोगिक चिन्ता उनको न मिलते हैं। यह पर ध्यान रखना आज के ज़माने में बहुत अनिवार्य है। चीन के स्कूलों के बच्चों को वहाँ के विद्या संप्रदाय में प्रायोगिक शिक्षा है। अगर उनको खेती के बारे में पढना है तो उनको

खेती में पहुँचाता है। इससे उनको खेती के बारे में सबकुछ समझ पायेगा। अकिश कुरोसोवा की कहानी 'टोटोचान' में यह बताता है। यह चीन का ही नहीं, सारे देशों का संप्रदाय है। अमेरिका में बच्चों अपनी पैसा मेहनत करके बनाते हैं और उससे ही पढ़ते हैं। इसलिए उनको सच्चे तरह पैसा खर्च करने के बारे में मालूम है।

अमेरिका की तरह हमारे शिक्षा संप्रदाय में भी '~~वोक्केषण~~ वोक्केष्णल एड्युक्केषण' होना चाहिए। वैज्ञाबिकों की कहना यह है कि विज्ञान संबंधी विषयों में प्रायोगिता हासिल करना अनिवार्य है। इसकेलिए सब विषयों को

समझकर सीखना चाहिए। लेकिन आज हमारे स्कूलों में विद्या केवल 'मार्क' लाने की मार्ग है। मार्क लेते तो वह है विजय। हमारे समाज में प्रचलित प्रथा है 'सफल होने केलिए मार्क होना है'। मार्क होना अनिवार्य है। लेकिन समझकर सीखना उससे बड़ा अनिवार्य है।

"विद्या तो
न चोर चुरा सकता है,
न डाकू ले सकता है।"

हमारे समाज में महिलाओं को कुछ देश में शिक्षा न मिलती हैं। प्राचीन काल से लोगों का कहना है कि 'लड़की

तो पराई है। इसके कारण उनको 18 या 19 हो तो उनकी शादी करते हैं। हम सब यह जानना है कि हमारे समाज में 49% लोग नारी है। अगर उनको सच्चे शिक्षा न मिली तो हमारे देश का भविष्य क्या बन जाएगा? विवेकानन्द ने एक बार कहा था कि स्त्री की शिक्षा में समाज के अंधकार को दूर करने की शक्ति है। अगर नारी जागरूक बन गए तो समाज भी जागरूक बन जाएगा। उनकी जागरूकता केवल उसकी शिक्षा में ही निर्भर करता है। इसलिए नारियों की शिक्षा आज के ज़माने में अनिवार्य है।

स्त्री-शिक्षा के प्रचीन काल में अनेक लोगों प्रयत्न किये थे। उनमें एक है 'सावित्रीभाई भूले'। उसने 1948 को एक स्कूल बना दिया। शिक्षा का मूल्य सब लोगों को मनाने केलिए ही उन्होंने ऐसे किये। 1982 को उन्होंने एक पुस्तक लिखा - स्त्री-पुरुष तुलना जिसमें उन्होंने सशक्त वाक्यों में लिंग-विवेचन के बारे में लिखा। ये सब नारियों की शिक्षा केलिए हैं।

हमारे समाज में एक दृष्टि है कि अच्छी तरह पढनेवाला बच्चा किसी भी प्रतियोगिता में न भाग लेना है। ऐसे करते तो वह पढाई में पीछे चल जाएगा। यह तो बहुत बुराई है। सब

बच्चे पढाई के अलावा अन्य कार्यक्रमों में भाग लेना है। इनकेलिए है हमारा सरकार बच्चों केलिए 'स्कूल कलोलस्ववं' शुरु किये। हम सब इनमें भाग लेना है। स्कूल में बच्चों को एन.एस.एस, एस.पी.सी, एन.सी.सी ऐसे सर्विस स्कीमों मिलते हैं। लेकिन बाकी को कुछ भी न मिलते हैं। आनेवाली शिक्षा संप्राय में इसी तरह कार्यक्रमों सब बच्चों केलिए भी होना चाहिए।

आज के पाठपुस्तकों में अंग वैकल्य बच्चों की भाषा न पढाने केलिए नहीं है। इसलिए उनको 'अलग' मानता है। अगर हमारे पाठपुस्तकों में उनकी भाषा है तो कितना अच्छा होगा। हाथ के मुद्राओं

से हमको उनसे बातें कर सकते हैं। यह तो बहुत अच्छा है। सब बच्चे ऐसी भाषा कुछ भी जानता है।

अगले साल में नई पाठ पुस्तकों आएँगे। उसमें परीक्षा के साथ प्रायोगिता को भी पढाएगा। यह बहुत अच्छा है। कुछ माँ-बाप अपने प्यारे विषयों को बच्चों को देता है। यह एक अच्छी बात नहीं। बच्चे अपने आपको आसान विषय चुनना चाहिए। यह उनके भविष्य केलिए एक अच्छा कार्या है।

शिक्षा बच्चों को 'शेबोड' बनने का मार्ग नहीं है। शिक्षा उनके व्यक्तित्व विकास का मार्ग है। इसलिए सच्चे शिक्षा

हासिल करना है। नए पाठपुस्तकों में आप आसपास में मर्यादा कैसे रखना, बुराई - सच्चाई को कैसे पहचानना, जीवन - मूल्यों क्या है, आदि भी होना ज़रूरी है। इनके साथ नशीले पदार्थों का उपयोग से होनेवाले बीमारियों और कठिनाईयों के बारे में भी होना चाहिए।

देश के विकास केलिए लोगों अपना स्वास्थ्य अच्छे तरह पालन पोषण करना चाहिए। लेकिन आज हमारे देश में नशाखोरी युवा पीढी को देश सकते हैं। यह देश की प्रगति को बुरी तरह प्रभाव बन जाएगा। इससे आज के युवा पीढी काल के मुँह की ओर जाते हैं।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"हमारा स्वास्थ्य ही जो
सबसे कीमती उपहार है।"

\- महात्मागाँधी

नए पाठ पुस्तकों को नशीले पदार्थों की हानि के बारे मे ज़रूर होना चाहिए। यह ~~केवल~~ युवा पीढी के स्वास्थ्य केलिए ही नहीं देश के स्वास्थ्य केलिए भी बहुत अच्छा है।

बच्चों को लिंग विवेचन, लिंग अतिक्रम आदि के बारे में समझदार बनना है। समाज में प्रचलित अंतविश्वास, बुराईयों के प्रति आवाज़ उठने की आवाज़ उनमें बनना है। 'प्रकृति संरक्षण' केवल पुस्तक में रखना रहना नहीं, हम इनकेलिए काम या प्रयत्न करना चाहिए।

यह एक शक्त आवाज़ उठानेवाले बच्चों को बनेगा। मलयालम की एक मशहूर कविता है 'विन्क'। इसमें भी यह आशय देख सकता है।

खेलने केलिए, गाने केलिए, आर्ड केलिए बच्चों को ~~६~~ आनेवाली ~~पा~~ ~~शिक्ष~~ शिक्षा में अवसर देना चाहिए। यह उनके मन को एक तरह के मनोरंजन दिएँगा। हमारे समाज में सब बच्चों को १४ आयु तक ~~भी~~ ही ज़रूर-शिक्षा देते हैं। लेकिन भारत के कुछ देशों में आज की भी ~~बालक~~ बालश्रम डाकू है। इसपर कानूनी रोक बनने के अलावा भी यह कई देशों में चालू है।

बालश्रम रोकना आज के ज़माने में अनिवार्य अनिवार्य है। उन बच्चों को भी सच्ची शिक्षा हासिल करने का अवसर देना है। सब बच्चे एक समान है। यहाँ लड़का - लड़की भेदभाव न होना चाहिए। इनकेलिए हमारे देश में 'नाषणल एड्युक्केषणल पोलिसी' है। इनमें कुछ बदलाव आज के ज़माने में अनिवार्य है। यह अमल में आए तो हमारे में से कुछ वैज्ञानिकों जन्म लाएँगे। बड़े - बड़े पुरस्कारों से भारत शोभित बन जाएगा। ये सब - हम सब भारतियों का सपना है।

पाठ पुस्तकों में 'टेररिस्सम' के बारे में होना है। देश में होनेवाली युद्धों के विरुद्ध

आवाज़ उठाना अनिवार्य है। बच्चों को गाँधीजी की मूल्यों को समझना है। इसलिए पाठपुस्तकों में 'गाँधियन प्रिंसिप्लिस' भी होना चाहिए। यह आज के युवा पीढ़ी में आक्रमण स्वभाव को रोक करेगा।

देश की प्रगति हमारे पाठपुस्तकों में है। देश की अच्छे भविष्य केलिए इनमें बदलाव होना ज़रूरी है। क्योंकि समय के अनुसार बदलाव आना ज़रूरी है। विद्या को समाज की भलाई केलिए उपयोग करना है। यह युद्ध करने या नाश करने केलिए नहीं है। शिक्षा भगवान की देन है। इसे सच्चे तरह उपयोग करना है।

" आप आज जो करते हैं
उसपर भविष्य निर्भर करता है "

एक नई समाज
केलिए हम सब प्रयत्न करना है। यदि हम आज से काम शुरू बन गए तो उसका भलाई ज़रूर मिलेगा। शिक्षा केवल स्थान, मर्क, आहदे केलिए नहीं एक अच्छे समाज या अच्छे भविष्य केलिए हैं। शिक्षा का सदुपयोग करके नई - नई आविष्कारों का उत्पन्न करना है। मनुष्य जीवन आसान बनने की प्रयत्न करें। इसके साथ 'सतत् विकास' पर भी ध्यान रखना है। शिक्षा से प्यार की रोशनी को फैलना है। इसलिए शिक्षा में बदलाव आना ज़रूरी है। ऐसे आए तो आज के

नई चुनौतियों को सामना करने की क्षमता हासिल बन जाएगा। प्रायोगिकता, समान-भावना, स्वास्थ्य, नशा, बालश्रम आदि सामाजिक समस्याओं पर ध्यान रखे तो ये सब दूर हो बन जाएगा। इनकेलिए बदलाव होना है। इसकेलिए हम प्रयत्न करना है। क्योंकि हमारे देश की प्रगति केलिए काम करना हमारा कर्तव्य है।

"खुद वो बदलाव बनिए जो
आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"

– महात्मा गान्धी

जयहिन्द

धन्यवाद।